259
898
H
P
Micro film

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1296
10/71

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 898

891.431
R 18 Vij.

श्री गणेशायनमः

॥ विजय सुन्दरी ॥

898

लेखक तथा प्रकाशक राम लगन राय।
प्रहलादपुर, सिलौत मुजफ्फरपुर

तीसरी बार १०००　　　मुल्य ‌/)॥
विहार वन्धु प्रेस मुजफ्फरपुर में मुद्रित सन् १९२४ ई०

श्री गणेशाय नमः ।

। भंवरवा ।

श्रीराम लछुमन बीर हनुमानजी के ।
सियाजीके चरण मनवनी भंवरवा ॥
तीरथ में घुमी २ सिवजी के पुजा कइली ।
भुखली मैं बरत जिउतिया भंवरवा ॥
बरत एकादसी के सुनी के महातम से ।
भरदिन रहती उपास हो भंवरवा ॥
छट एतवार कई गंगा स्नान कईली ।
कालो जी के डलवा चढ़वनी भंवरवा ॥
का अपराध मोरा भईले दईबवा से ।
पीयाजी मीलेले बड़ा छोट रे भंवरवा ।
का तुहु भवरा हो घुमी फीरी आवतारे ।
हमरा के सूलना देखाव हो भंवरवा ॥
हमरी वयस भईले बीस तीन तेइस के ।
पीयाजी के आठ के करीब हो भंवरवा ॥
बोले नाहीं आवे कुछ सुते के ना हाल जाने ।
प्रेमवां के बात कासे करू हो भंवरवा ॥
आधी २ रतिया के जाइले सेजरिया से ।
कोरबा में धाइ के लुकाला हो भंवरवा ॥
प्रेमवा के बस हम [illegible] होले मिलनवां से ।
[illegible]माइ बाप कही के चौलावे होभंवरवा ॥

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
NO 898
Date 24.12.71
GOVT. OF INDIA

कुहुकि २ मोरे बिते सारी रतिया से ।

छतिया के आगो ना बुताला हो भंवरवा ॥

हमरा ले नीमन बलु रांड़ ये सबुर कइली ।

पतीजी के नामवा डुबाइ हो भंवरवा ॥

हमरा ले छोटे छोटे भइली लरकोरिया से ।

सेहु देखी जियरा लोभाइ हो भंवरवा ॥

सब सखी जुवा सार खेलें नीज पती संगे ।

मोर पिया झू झुना बजावे हो भंवरवा ॥

केहु केरे सैया रामा लावे झु ना सरिया से ।

केहु के ले आवे सीर वेन्दिया भंवरवा ॥

काहु के ले आवे सैंया नाक के बेसरिया ।

काहु के ले आव सुन्दर चोलिया भंवरवा ॥

केहु केरे पिया लवे हाथ के कंगनवा से ।

मोर पिया खटिया पर कुहु के भंवरवा ॥

सब सखी सुते रामा अपना बलमू संग ।

देखी २ बिहरे करेजवा भंवरवा ॥

सब सखी पेन्हो २ लाली पीली सरिया से ।

पिया के रिझाई खेल करे हो भंवरवा ॥

मोर पिया बाडे रामा बाड़ा रे नादानवा से ।

के करा पर करवों सिंगार हो भंवरवा ॥

चढ़ली जवानी मोरे मदन सतावतारे ।

काके ढींग जीब अब कहबो भवरवा ॥

नैहर में रही तो त मन में सबुर होइते।
नाहक में भइले विअहवा भंवरवा ॥
नाहक मे लोग अहेवाती मोही कहेले से।
नाहक में करीले सेन्दुरवा भंवरवा ॥
एक मन करे रामा बुड़ी धसी जइतो से।
जगवा से नमवां बुतइते भंवरवा ॥
दुसरे होखेला पर पती सगे मोलतो से।
धरम के करीले बिचरवा भवरवा ॥
माइ बाप कुछ नाहीं कइले विचरवा से।
करम में अगोया लगवले भंवरवा ॥
घर द्वार देखों कर कइलो बिअहवा से।
पती के ना कइलो ख्यालवा भंवरवा ॥
हाय २ बाबुजी हो कु अवां में ढकेलल से।
बार बार रोइ छातो पोटी हो भंवरवा ॥
अगुआ रहले मोरा हजमा बभनवां से।
रुपया के लालच में भुलले भंवरवा ॥
प्रथम गइले नैहर के बभनवां से।
जमा तोड़ा पेन्हो फेटा बन्धले भंवरवा
काने माथे टोकवा वो हाय में पतरवा से।
चली भइले ससुरा नगरिया भंवरवा।
दही चौउरा मिठवा से पेटवा तो भरी गइलो।
पतरा में देखी दिन नोचले भंवरवा ॥

भदरा भरनो कुछ देखे के नाहाल जाने ।
पेटत्रा भरे से बांठे कामवां भंवरवा ॥

जइसे कुहुको हम लाली रे पलगियांसे ।
वैसे कुहुको अगुआके जोइआ भंवरवा ।

सात जनम तक नरकमें बास करीहें ।
जे मोर करवले बिअहवा भंवरवा ॥

दुइ चार दिनवाके दुखवा सहलजाला ।
नीन २ बीरहा सतावत भंवरवा ॥

आगी लगो घरवा बजर परो धनबासे ।
सब सुख बाड़े मोरे सुलवा भंवरवा ॥

इहो रे जवानी हम कहंवां गवाइबोसे ।
चैन नाही परे दिन रतिया भंवरवा ।

तुहरो कलोल देखो मनवा बेहाल भइले ।
जोबना धरेला नाही धीरवा भंवरवा ॥

रोअत २ हम भइली पगलिनियासे ।
लोगवा करेला बदनमवा भंवरवा ॥

मोरा लेखे कुछ नाहीं सुख बाड़े दूनियामें ।
हम्हीं अभागिनी जनमनी भंवरवा ॥

अगहन मास जब जाड़वा परन लागे ।
पुस माघ पालवा सतावत भंवरवा ॥

सब कर पिया रामा देहवा गरम करे ।
ठाढ़ु रेला हमरो जोबनवा भंवरवा ॥

फागुनके हवा अब लागेला सरीरवा में।
मनवा होखेला मस्तान हो भंवरवा ॥

अपना बलमु संगे सखी सब रंग खेले।
मनवां के करे मतलबवा भंवरवा ॥

अबीर गुलाब अरु केशर चन्दन बाड़े।
देखी २ टपकेला नीरवा भंवरवा ॥

चैत सुभ मास रामा अमवा मोजरी गइले।
गाछे २ लागेला सरोसइ भंवरवा ॥

नई २ बगीया में विहरे कोइलिया से।
कुहुके करेजवा हमार हो भंवरवा ॥

जेठ वैसखवामें लुकवा गिरन लागे।
सुखी जा ला उठल जोबनवां भंवरवा।

मास अषाढ़ घेरे काली रे बदरिया से।
चिहुकेला जिअरा हमार हो भंवरवा ॥

सावन भदउवा आधी रातके पहरवा से।
झिमिर झिमिर बुंद बरिसे भंवरवा ॥

जैसे तैसे काटौं भंवरा और दिन रयिया से।
जुलुमके ठाट इहे मासवा भंवरवा ॥

आंषीन मास रामा सबुर करीले कुछ।
जलसा के कातिक महिनवां भंवरवा ॥

अब सखी जाली रामा गंगा स्नान करे।
गंगाजीके पिठवा चढ़इहें भंवरवा ॥

केहु केरे देली गंगा गोद में बालकवा से।
केहु के दीहली सुन्दर पिअवा भंवरवा ॥
हमरा के दुसरा के मोटरी चढ़वली से।
हमरे में देखली कुचालिया भंवरवा ॥
हेप्रभु दीना नाथ बिपती हमार देखी।
जलदी से जग से उठाव हो भंवरवा ॥
जगवा में दुखी २ इही व्यवहारवा से।
नाथ शरण पुरबी बनवले भंवरवा ॥
पोष्ट चैनपुर जिला हवे छपरा से।
गाम सराव बास करले भंवरवा ॥
बालक बिआह हेतु बुधी बल नाश ोत।
परेला अनेक बिधी दुखवा भंवरवा ॥
कहाले ब्याँन करुं सबरे बिपतिया के।
भाइ सब करहु बिचरवा भंवरवा ॥
सुरनर मुनी वो पुरान में कहल बाढ़े।
लिखल बाटे सब इतिहास में भंवरवा ॥
बैर बिबाह प्रीति करेके समान हीं में।
इही वाटे हमरो अरजिया भंवरवा ॥

खेमटा।

मानी लेहु हमरी बचनियां रे गोरिया
तुं छाड़ी दे कपड़ा बिदेशिया ॥टेक॥

चरखा चलावो कपड़ा बिनवो छाडोना

हरिसे प्रीतिया रे गोरिआ तुं

छाड़ि दे कपड़ा बिदेसिया ॥मानि लेहु हमरो ॥

मनमें बिचार करु पेन्हु खदरवा खोली लेहु दील

के खीरीकिया रे गोरिआ तु छाड़ी दे कपड़ा बिदेशिया ॥ मानि०

सासु ससुर का प्रेमवा से पुजवा इहै हइवे

कुल के रितिया रे गोरिया:तु छाड़ि दे कपडा बिदेसिया ॥

लेहु० ॥ नेता सब जाइ जेहलवा में फसलो नैना से

टपकेला मोतिया रे गोरिया तु छाड़ी दे कपड़ा बिदेशिया ।। मनि

लेहु हमरा बचनिआ । गहना भी छाड़ो कपड़वा भी

छाड़ो छाड़दे बिदेशिया के मोसिया रे गोरिया तुं छाड़ि दे

कपड़ा बिदेशिया ।। मानि लेहु० ॥ नाथशरण क-

ही गाइ सुनवले कब देखो गांधी के सुरतिया रे गोरिया तु छा-

ड़ि दे कपड़ा बिदेशिया ॥ मानि लेहु हमारी वचनि

या ॥

प्यारीवियोग।

दसरथ सुत चारो भइआ के,

मनइहोये ननदिया मोरी रे ।

संगवा में सुन्दरी सोहाग, येननदिया मोरी रे ॥

दुरुगा भवानी काली मइआ के,

मनइहे ये ननदिया मोरी रे ।

पतिजी के चरण मनाइ ये ननदिया मोरी रे॥
मनवां में सोच प्यारी गांधी के,
बचनिया ये ननदिया मोरी रे
सोचो लेहु नेता के सवाल ये ननदिया मोरी रे॥
अब २ मन परे गाधीजी के,
हलिया ये ननदिया मोरी रे।
सालेला करजवा में बान ये ननदिया मोरी रे॥
कहां गइले अर्जुन भीम पाचो
भइया ये ननदिया मोरी रे।
कीधर तीलक महाराज ये ननदिया मोरी रे॥
कहवां परिक्षीत राजा गोकुल देश
भइआ ये ननदिया मोरी रे।
गउआ के रहले पियार ये ननदिया मोरी रे॥
कहां गुरुद्रोन पुत्र अल्हा रुदल
भइआ ये ननदिया मोरी रे।
भारत के रहले सिंगार ये ननदिया मोरी रे॥
भारत के बीर सब कहां चली
गइले ये ननदिया मोरी रे।
विपति परेला घनघोर ये ननदिया मोरी रे॥
क्षत्रिय के राज गइले अइले
फीरंगिया ये ननदिया मोरी रे।
देशे २ होखे अत्याचार ये ननदिया मोरी रे॥

ब्राह्मण अगिनियां के तेज

घटी गइले ये ननदिया मोरी रे।

सूरज उगेले मन मारो ये ननदिया मोरा रे ॥

धरमके नाश भइले पाप जग

छवले ये ननदिया मोरी रे

लोगवा भइले बे बिचार ये ननदिया मोरी रे॥

घरे २ मेल नाहीं झगरा,

मचवले ये ननदिया मोरी रे।

फुटी गइले भारतके भाग ये ननदिया मोरी रे

देशवा के जिनिश विदेशवा

पधरले ये ननदिया मोरी रे।

भइले विदेशी परचार ये ननदिया मोरी रे॥

हिन्दू मुसलमान भाई छोड़ना

बिदेशिया ये ननदिया मोरी रे।

बार २ परेला अकाल ये ननदिया मोरी रे॥

भारत के एक बाबा गांधी जी

सुधारे ये ननदिया मोरी रे।

करेला सुदेशी परचार ये ननदिया मोरी रे॥

हमरो अरज एक मनवां में।

धरी हे ये ननदिया मोरा रे।

सैयां से कहो हे समुझाय ए ननदिया मोरी रे॥

छोड़ी हं विदेशी चीज पेन्ही हैं

सुदेसिया ये ननदिया मोरी रे ।

चरखा के करी हें परचार ये ननदिया मोरी रे ॥

कोटवा कचहरिया के नाम बां डुबइहें ये नन०

छोड़ि हें ओकिलवा के साथ ये ननदियां मोरी रे ॥

पुलिसके नौकरी मे अगिया

लगइहें ये ननदिया मोरी रे ।

गौपुकार पद निर्गुण

रोइ रोइ करीले पुकार करम मोरा बाउर ए रामा ।

जे करे में करीले भरोस न उहो फसी जालेंनु न रामा ॥

हम अनबोलता बेहाल बिपत घेरि आवले ए रामा ।

तुहो अब बाड़ दिन नाथ त दुष्टवा सतावेला ए राम ।

भारत के भाइ सुती गइले त कैसे के जगाइबी ए राम ।

निंदिया परले घनाघोर त छाति पीटि रोइले ए राम ॥

अपने ती बन्हेले गेठरिया त हमे छोड़ी लेलनु राम ।

फाटे नाही छतिया तोहार त दुधवा पिआइले ये राम ॥

जब हो रहे बछवा सेआन त दुख सुख झेला झेली ये राम ।

करी हे गुलमियां तोहार त लाज नाही लागेला ये राम ॥

पगहा तु हमरो धरवले भेजेल कवना देशेनु ये राम ।

हैं हम मतवा तोहार सुरती बिसरावेल ये राम ॥

होइन भलइआ तोहार त मनना सुधारेल ये राम ।

कबहोइहें कृष्ण अवतार कबले दुख भोगवों ये राम ॥

बुड़ोले मैं सागर अथाह त पार नाहीं पाइले ये राम ।
बार २ करीले मिनतिया सुनिये मधु सूदन ये राम ।
राक्षस के करीना संहार गोपालजी कहाइले ये राम ।
खोजौले मैं चरन तोहार बनेरे बने ढुढ़ले ये राम ।
आइके हरह सब पीर त काहे बीसराइले ये राम ॥
हाय वह दिनवां हमारे कहां रे चली गइलेनु ये राम ।
कहवां बसेल सुख मोर व चैन नाहीं परेला ये राम ॥
जब २ होखे अतिचार तो लीले अवतार नु ये राम ।
हरीले धरतियाके भार त दुष्टवा संहारीले ये राम ।
किये तुम सिया दुख दूरी जनक प्रण राखेनु ये रामा ।
द्रौपदी के राखे तुम लाजे त संकट उबारेला ये राम ॥
कहवां उ गकुला ब्रिन्द्रावन जहां हमें खोजौले ये राम ।
कहां वह बासुली के सोरत कहवां बजाइले ये राम ॥
गलवामें लागेला फसरिया केहुना दुख सुनेला ये राम ।
रोइले मैं जार बेजार त तुहें गोहराइले ये राम ।
नाथ शरब कर जोरी मरजो करी धावहु ये राम ।
गइआ के करहु उबार त भाई सोर नाइले राम ॥

इति शुभम्